

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता, सत्र 8, मसीह के साथ एकता के लिए आधार , प्रेरितों के कार्य, भागीदारी, जॉन का सुसमाचार

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 8 है, मसीह के साथ एकता के लिए नींव, प्रेरितों के काम, भागीदारी, यूहन्ना का सुसमाचार।

इस व्याख्यान में, हमारा लक्ष्य पुराने नियम में मसीह के साथ एकता के लिए नींव के हमारे सर्वेक्षण को समाप्त करके यूहन्ना के सुसमाचार और पॉल के पत्रों में मसीह के साथ एकता के सिद्धांत के लिए नींव रखना है, जिसे हमने पहले ही समकालिक सुसमाचारों में कवर किया है, जो हमने किया है, और अब प्रेरितों के काम की पुस्तक के लिए, हमने पहले दो पहलुओं के बारे में बात की है, और वह है परमेश्वर के लोगों की पहचान, इस बार स्वयं यीशु के साथ और उनके द्वारा चर्च पर आत्मा को उंडेलना, परमेश्वर के लोगों का समावेश, जिसका बहुत कुछ पिन्तेकुस्त और उसके परिणामों से संबंध है, और ईसाई बपतिस्मा, जो किसी व्यक्ति को चर्च में शामिल करता है।

तीसरा, यीशु की कहानी के दोहराव में और प्रेरितों के काम में लूका द्वारा यशायाह के पीड़ित सेवक के भाव का उपयोग करके मसीह के साथ एकता में भागीदारी की आशा की जाती है। मसीह के साथ एकता का सहभागी पहलू प्रेरितों के काम में दो मुख्य स्थानों पर दिखाई देता है, चर्च के जीवन में यीशु की कहानी के दोहराव में और लूका द्वारा यशायाह के पीड़ित सेवक के अंशों का उपयोग।

तो, सबसे पहले, चर्च के जीवन में यीशु की कहानी के दोहराव में विश्वासियों की भागीदारी। बेशक, हमें दो खंडों लूका, लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक को एक पूरे के रूप में देखना चाहिए। डेनिस जॉनसन बहुत मददगार हैं। उनकी पुस्तक, *द मैसेज ऑफ़ एक्ट्स इन द हिस्ट्री ऑफ़ रिडेम्पशन*, उत्कृष्ट है और मेरे लिए बहुत मददगार साबित हुई है।

लूका-प्रेरितों के काम एक इकाई है। डेनिस जॉनसन ने नोट किया कि प्रेरितों के काम की व्याख्यात्मक कुंजियों में से एक लूका का सुसमाचार है। लूका और प्रेरितों के काम में कई समानताएँ हैं जो यीशु की कहानी और प्रारंभिक चर्च के बीच महत्वपूर्ण संबंध स्थापित करती हैं।

प्रेरितों के काम में मसीह के साथ एकता पर विचार करते समय सबसे सार्थक संबंध वह तरीका है जिसमें आरंभिक चर्च की कहानी, कई मायनों में, लूका के सुसमाचार में बताई गई यीशु की कहानी की पुनरावृत्ति है। ऐसे संरचनात्मक चिह्न हैं जो बताते हैं कि यीशु-चर्च समानांतर लूका के साहित्यिक इरादे का हिस्सा है। लूका के सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक दोनों की शुरुआत में यीशु और चर्च के बीच समानताएँ शामिल हैं।

सबसे पहले, मैं बस इसका उल्लेख करूँगा और फिर वापस जाकर इसका दस्तावेजीकरण करूँगा। आत्मा द्वारा अभिषेक सबसे पहले है। दूसरा, अभिषेक को समझाने वाला एक उपदेश।

तीसरा, आत्मा की शक्ति में प्रभावी सेवकाई चौथे, यहूदी धर्म के नेतृत्व द्वारा विरोध या उत्पीड़न की ओर ले जाती है। सबसे पहले, लूका के सुसमाचार और यीशु के जीवन के लिए, हम लूका 3 में देखते हैं, यीशु को आत्मा द्वारा अभिषिक्त किया जा रहा है, लूका 3, 21-22। अब, जब सभी लोगों ने बपतिस्मा लिया और जब यीशु ने भी बपतिस्मा लिया और प्रार्थना कर रहा था, तो स्वर्ग खुल गया, और पवित्र आत्मा एक कबूतर की तरह शारीरिक रूप में उस पर उतरा, और स्वर्ग से एक आवाज ने कहा, तुम मेरे प्रिय पुत्र हो।

मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। यह यीशु का आत्मा से अभिषेक किया जाना है। दूसरा, अभिषेक की व्याख्या करने वाला उपदेश लूका के सुसमाचार के अगले अध्याय में पाया जाता है।

अध्याय 4 और श्लोक 16 में, यीशु नासरत आया, जहाँ वह बड़ा हुआ था। जैसा कि उसका रिवाज था, वह सब्त के दिन आराधनालय में गया, और वह पढ़ने के लिए खड़ा हुआ, जैसा कि प्रचलन था। और उसे भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक दी गई।

उसने पुस्तक को खोला और वह स्थान पाया जहाँ लिखा था। प्रभु की आत्मा मुझ पर है क्योंकि उसने मुझे गरीबों को खुशखबरी सुनाने के लिए अभिषेक किया है। उसने मुझे बंदियों को आज़ादी और अंधों को दृष्टि पाने का संदेश देने के लिए भेजा है। जो लोग सताए गए हैं उन्हें आज़ाद करने के लिए, प्रभु के अनुग्रह के वर्ष की घोषणा करने के लिए।

फिर वह पुस्तक को लपेटता है और बैठ जाता है और आश्चर्यजनक रूप से कहता है, लूका 4 की आयत 21 में, आज यह शास्त्र तुम्हारे सुनने में पूरा हुआ है। तो, लूका के सुसमाचार द्वारा नमूना स्थापित किया गया है। यीशु को उसके बपतिस्मा के समय आत्मा से अभिषिक्त किया जाता है।

फिर यीशु स्वयं एक उपदेश देते हैं जिसमें यशायाह 61 आयत 1 और 2 में भविष्यवक्ता यशायाह की पुराने नियम की भविष्यवाणी के अनुसार अभिषेक की व्याख्या की गई है। तीसरा, आत्मा की शक्ति में प्रभावी सेवकाई। हम इसे लूका के सुसमाचार में कई स्थानों पर देखते हैं। लूका 4:1, यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर जॉर्डन से लौटे और 40 दिनों तक जंगल में आत्मा के द्वारा चलाए गए, जहाँ शैतान ने उनकी परीक्षा ली।

4:14 और यीशु आत्मा की शक्ति में गलील को लौट गया और उसके बारे में खबर आस-पास के सभी इलाकों में फैल गई। लूका 4:18 में, जैसा कि हम पढ़ते हैं, यीशु ने यशायाह 61 को उद्धृत किया, प्रभु की आत्मा मुझ पर है। और फिर एक और जगह, लूका 10:21 में, हम यीशु के बारे में पढ़ते हैं; उसी समय, यीशु पवित्र आत्मा में आनन्दित हुए और कहा, हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और ज्ञानियों से छिपाकर बालकों पर प्रगट किया है।

हाँ, पिता, क्योंकि आपकी कृपापूर्ण इच्छा ऐसी ही थी। यीशु ने पश्चाताप न करने वाले शहरों पर विपत्तियाँ घोषित की थीं और परमेश्वर की संप्रभु योजना और पिता और पुत्र के पारस्परिक ज्ञान

के बारे में बात की थी, जैसा कि अंश आगे बताता है। लेकिन हमारा मुद्दा यह है: यीशु ने इन शब्दों को कहने से पहले पवित्र आत्मा में आनन्दित हुए।

तो यहाँ लूका के सुसमाचार में पैटर्न है: यीशु को आत्मा द्वारा अभिषिक्त किया गया, यीशु ने अभिषेक की व्याख्या करते हुए एक उपदेश दिया, हम लूका के सुसमाचार में आत्मा की शक्ति में प्रभावी सेवकाई देखते हैं, प्रभु यीशु द्वारा सेवकाई यहूदी धर्म के नेतृत्व द्वारा विरोध या उत्पीड़न की ओर ले जाती है। हम इसे लूका 9:22 में देखते हैं; वह अपने शिष्यों से इसे गुप्त रखने के लिए कहता है। इस बिंदु पर, मनुष्य के पुत्र को बहुत सी पीड़ाएँ सहनी होंगी और पुरनियों और मुख्य याजकों और शास्त्रियों द्वारा अस्वीकार किया जाएगा और मार डाला जाएगा और तीसरे दिन जी उठेगा, लूका 9:22। फिर वास्तविक षड्यंत्र लूका 22 आयत 1 और 2 में होता है। अब, अखमीरी रोटी का पर्व निकट आ गया, जिसे फसह कहा जाता है, और मुख्य याजक और शास्त्री उसे मार डालने का उपाय ढूँढ़ रहे थे, क्योंकि वे लोगों से डरते थे। अब, मुद्दा यह है: प्रेरितों के काम की पुस्तक में लूका दिखाता है कि कैसे परमेश्वर ने आरंभिक कलीसिया के साथ इसी चार प्रकार के व्यवहार का अनुसरण किया जिसे हमने लूका के सुसमाचार में यीशु के जीवन में देखा था।

तो, अगर आप लूका भाग 1 में यीशु के जीवन के इन चार तत्वों को देखेंगे, तो लूका भाग 2, यानी प्रेरितों के काम, उन्हें काफी हद तक, बल्कि सटीक रूप से, प्रारंभिक चर्च के जीवन में दोहराया हुआ दिखाता है। मुझे इसे दस्तावेज़ित करने दें। बेशक, प्रेरितों के काम 2 में पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा द्वारा चर्च का अभिषेक किया गया है।

धमाका, पवित्र आत्मा नएपन और शक्ति के साथ आता है; परमेश्वर ध्वनि और प्रकाश का प्रदर्शन करता है, तेज़ हवा और आग की जीभें शिष्यों पर टिकी होती हैं, और निश्चित रूप से आत्मा द्वारा अभिषेक होता है। इसके तुरंत बाद प्रेरितों के काम में पतरस का पहला उपदेश आता है, और वह जो करता है वह अभिषेक के बारे में बताता है। वह कहता है कि ये लोग नशे में नहीं हैं, लेकिन यह वही है जो भविष्यवक्ता योएल के माध्यम से कहा गया है।

अंतिम दिनों में, मैं प्रेरितों के काम 2:17 से पढ़ रहा हूँ, और वह योएल 2 से उद्धरण दे रहा है। अंतिम दिनों में, परमेश्वर घोषणा करता है कि मैं अपनी आत्मा को सभी प्राणियों पर उंडेलूंगा। और उसने वैसा ही किया। इसलिए, यीशु के जीवन में लूका के पैटर्न को चर्च के जीवन में प्रेरितों के काम के पैटर्न में दोहराया गया है।

आत्मा पिन्तेकुस्त के दिन आती है, चर्च का अभिषेक होता है, और उसके तुरंत बाद एक उपदेश होता है जिसमें उस अभिषेक के बारे में बताया जाता है; यह स्टीफन का उपदेश होगा, और वह जोएल को उद्धृत करने से कहीं अधिक करता है। वह दिखाता है कि कैसे पिता, पद 33 में कहते हैं कि यीशु को मृतकों में से जिलाया गया, 32, इसलिए पिता से पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा प्राप्त करके परमेश्वर के दाहिने हाथ पर उंचा किया गया। उसने इसे उंडेला है जिसे तुम स्वयं देख और सुन रहे हो।

तीसरा, सेवकाई आत्मा की शक्ति में एक प्रभावी सेवकाई है। यीशु के पास यह था, और चर्च के पास भी था, और यह बहुत पहले ही शुरू हो गया था। आत्मा का हमेशा उल्लेख नहीं किया जाता

है, हालाँकि शिष्य लगातार यीशु को महिमा देते हैं और कहते हैं कि वे ये सब उसके नाम पर कर रहे हैं, लेकिन कभी-कभी आत्मा का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाता है, जैसा कि 4:8 में है। फिर पीटर, पीटर और जॉन को महासभा के सामने बुलाया जाता है और वे एक इंच भी पीछे नहीं हटते, 4:8। तब पतरस पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहने लगा, हे लोगों के सरदारों और पुरनियों, यदि आज हम से इस लंगड़े के भले काम के विषय में पूछा जा रहा है, कि वह किस रीति से अच्छा हुआ है, तो तुम सब और सारे इस्राएलियों को मालूम हो कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुएों में से जिलाया, उसी के द्वारा यह मनुष्य तुम्हारे साम्हने भला चंगा खड़ा है। और 4:31 में, जब अधिकारियों ने प्रेरितों को धमकाया, तो कुछ लाभ नहीं हुआ।

वास्तव में, प्रेरितों के काम 4:31 में, उन्होंने एक साथ प्रार्थना की, और उसके बाद, जिस स्थान पर वे इकट्ठे हुए थे, वह हिल गया, और वे सभी पवित्र आत्मा से भर गए और निर्भीकता के साथ परमेश्वर का वचन बोलते रहे। तो, यहाँ मुद्दा यह है। यीशु की कहानी में भागीदारी, जो कि पौलुस की शिक्षा है, हम मसीह के साथ मर गए, हम उसके साथ दफनाए गए, हम उसके साथ जी उठे, हम उसके साथ स्वर्ग में बैठे हैं, और यहाँ तक कि एक भावना भी है, जैसा कि हम देखेंगे, हम उसके साथ फिर से आ रहे हैं।

याद रखें, मैंने कहा, एक तरह से यह सच है। पॉल हमें यीशु के साथ भ्रमित नहीं करता है, लेकिन वह कहता है कि हम उसके साथ इतने गतिशील रूप से आध्यात्मिक रूप से जुड़े हुए हैं कि उसके लोगों के रूप में हमारी असली पहचान केवल तभी प्रकट होगी जब हम प्रकट होंगे, कुलुस्सियों 3:3, जब वह उसी आयत में अपने दूसरे आगमन में प्रकट होता है। प्रकट होना शब्द का प्रयोग, प्रकट होना क्रिया, यीशु और उसके चर्च के लिए उल्लेखनीय रूप से किया जाता है।

तो जैसा यीशु के साथ था, वैसा ही उसके चर्च के साथ भी है, आत्मा से अभिषेक, अभिषेक को समझाने वाला उपदेश, आत्मा में प्रभावी सेवकाई, और चौथा, बेशक, प्रेरितों के काम यहूदी नेतृत्व द्वारा विरोध और उत्पीड़न से भरा हुआ है, और हमें प्रेरितों के काम 4:17 और 18 से आगे जाने की ज़रूरत नहीं है। प्रेरितों के काम के दूसरे भाग में पौलुस के उत्पीड़न अविश्वसनीय हैं, लेकिन अभी के लिए, 4:17 और 18, महासभा आपस में बात कर रही है। ताकि यह संदेश आगे न फैल जाए, ये लोग लोगों के बीच यीशु के बारे में प्रचार कर रहे हैं, आइए हम उन्हें चेतावनी दें कि वे उसके नाम पर किसी से भी बात न करें।

इसलिए, उन्होंने उसे बुलाया और उन्हें यीशु के नाम पर कुछ भी न बोलने या सिखाने का आदेश दिया। और निश्चित रूप से, वे उन्हें जेल में डालना जारी रखते हैं और इसी तरह, और वे चर्च को तब तक दृढ़ता से सताते हैं जब तक कि चर्च, भगवान इसे तितर-बितर नहीं कर देता और इस तरह सुसमाचार फैलाता है, जो प्रेरितों के काम 1:8 के वादे को पूरा करना शुरू कर देता है। विभिन्न बिंदुओं पर, न केवल चर्च ईश्वर की कृपा से चर्च के जीवन में यीशु की कहानी को पुनः प्रस्तुत करता है, बल्कि प्रेरितों के काम में विभिन्न बिंदुओं पर, यीशु को पीटर, स्टीफन और पॉल द्वारा समानांतर रूप से दर्शाया गया है। समानताओं में स्टीफन के मरने के शब्द शामिल हैं जो मसीह के जुनून को प्रतिध्वनित करते हैं।

यीशु ने कहा था, पिता, उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं, और स्टीफन ने अपनी मृत्यु की पीड़ा में पुकारा, प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण करो, और प्रभु, यह पाप उनके विरुद्ध मत रखो। और जब उसने यह कहा, तो वह सो गया। यीशु ने कहा, पिता, मैं अपनी आत्मा को तुम्हारे हाथों में सौंपता हूँ।

स्तिफनस कहता है, प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण करो। यीशु कहते हैं, इस पाप को उनके विरुद्ध मत रखो। और स्तिफनस भी लगभग यही शब्द कहता है।

हम न केवल स्टीफन के शब्दों में, बल्कि पीटर, क्षमा करें, पॉल की अंतिम यात्रा में भी समानता देखते हैं, जहाँ उसने तीसरी बार यरूशलेम लौटने का संकल्प लिया, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने किया था। सबसे पहले, लूका की पुस्तक में यीशु, लूका 9:51, हम देखते हैं कि यीशु ने अपने संकल्प को अविश्वसनीय रूप से देखा। जब उसके ऊपर उठाए जाने के दिन निकट आए, तो यह लूका 1 की तरह लगता है, उसके स्वर्गारोहण को उसके ऊपर उठाए जाने के लिए कहा गया है।

उसने यरूशलेम जाने का निश्चय किया, और वास्तव में, कोई भी चीज़ उसे अपना मार्ग पूरा करने और यरूशलेम में पहुँचने से नहीं रोक सकती, जहाँ वह दुनिया के पापों के लिए, अपने लोगों के पापों के लिए मरेगा। पौलुस, इसी तरह, तीसरी बार यरूशलेम लौटता है, जैसा कि हम प्रेरितों के काम में देखते हैं। हमारा कहना यह है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में पतरस, स्तिफनस और पौलुस के जीवन के बीच समानताएँ हैं।

और हम उनमें से कुछ का उदाहरण दे रहे हैं। यह उस बड़े बिंदु का हिस्सा है, यीशु की कहानी के दोहराव में भागीदारी। मसीह के साथ वास्तव में एकता नहीं, लेकिन यह पॉल की पत्रियों में मसीह के साथ एकता की नींव रखता है।

प्रेरितों के काम 20:22 में पौलुस मीलेटस में इफिसियों के प्राचीनों से बात करते हुए कहता है, "मैं आत्मा के वश में यरूशलेम जा रहा हूँ, और नहीं जानता कि वहाँ मेरे साथ क्या होगा।" और 21:13 में वह कहता है, "मैं प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में न केवल कैद होने के लिए बल्कि मरने के लिए भी तैयार हूँ।" भाई उसे ऐसा करने से नहीं रोक सकते।

वे कोशिश करते हैं, और अंत में कहते हैं कि प्रभु की इच्छा पूरी हो। वे परमेश्वर के आगे झुक जाते हैं। इसलिए, पौलुस दृढ़ता से तीसरी बार यरूशलेम लौटता है, ठीक वैसे ही जैसे यीशु लौटा था।

इसलिए, हम देख सकते हैं कि प्रेरितों ने मसीह की कहानी में कैसे भाग लिया। उन्होंने अपने जीवन में उसकी कहानी के पहलुओं को दोहराया। यह भागीदारी बताती है कि चर्च अपने शिष्यत्व और मिशन में यीशु की कहानी में भाग लेता है।

प्रारंभिक चर्च के जीवन में यीशु की कहानी का पुनरावर्तन इस कहानी को मसीह के साथ संगति के माध्यम से एक तरह की एकता के रूप में इंगित करता है, विशेष रूप से उसके दुखों के साथ संगति। यह भागीदारी मसीह के साथ एकता के बिल्कुल समानांतर नहीं है। यह मसीह के कार्य की अनन्य प्रकृति को कम नहीं करता है, लेकिन यह मसीह के साथ एक होने का क्या मतलब है, इसकी एक तस्वीर प्रदान करता है।

दूसरा और अंतिम, प्रेरितों के काम में इस सहभागिता विषय के बारे में, यूहन्ना और पौलुस में मसीह के साथ एकता के लिए दिव्य आधार के भाग के रूप में, लूका द्वारा यशायाह के पीड़ित सेवक अंशों के उपयोग में सहभागिता है। जब हमने मसीह के साथ एकता के लिए पुराने नियम की नींव के बारे में सोचा तो हमने उन पर संक्षेप में विचार किया। अब, लूका में, सेवक गीतों का उल्लेख यीशु के संदर्भ में किया गया है, जबकि प्रेरितों के काम में उन्हें परमेश्वर के दूत के रूप में प्रेरितों के संदर्भ में उद्धृत किया गया है।

एक बार फिर, यह पैटर्न यीशु के जीवन, चर्च के जीवन और इस मामले में प्रेरितों में है। सबसे पहले, लूका में शिमोन शिशु यीशु को “अन्यजातियों के लिए प्रकाश के लिए एक प्रकाश” के रूप में बधाई देता है। यह यशायाह 49:6 का एक संकेत है। हम देखेंगे कि लूका, प्रेरितों के काम में, यशायाह 49:6 को उद्धृत करता है। मैं इसे यहाँ एक बार पढ़ूँगा, और यह दोहरा काम कर सकता है, लेकिन यह आकर्षक है; शिमोन केवल इसका पहला भाग उद्धृत करता है।

लूका ने प्रेरितों के काम में पूरी आयत उद्धृत की है। यशायाह 49:6, यह बहुत छोटी बात है कि तू याकूब के गोत्रों को उठाने और इस्राएल के रक्षित लोगों को लौटा लाने के लिए मेरा सेवक ठहरे। अब, यहाँ वह भाग है जिसे उद्धृत किया गया है।

मैं तुम्हें राष्ट्रों के लिए ज्योति बनाऊँगा ताकि मेरा उद्धार पृथ्वी के छोर तक पहुँच सके। शिमोन इन शब्दों के पहले भाग के साथ शिशु यीशु का अभिवादन करता है। यह शिशु अन्यजातियों, राष्ट्रों के लिए रहस्योद्घाटन के लिए एक ज्योति होगा, जो यशायाह 49:6 का एक संकेत है। प्रेरितों के काम 13:47 में, पौलुस और बरनबास सुसमाचार के संदेशवाहक के रूप में खुद के लिए एक आदेश के रूप में उसी मार्ग का हवाला देते हैं।

पिसिदिया के अन्ताकिया में भीड़ द्वारा पौलुस को अच्छी प्रतिक्रिया मिलनी शुरू हो गई थी, और जब पौलुस और बरनबास फिर से प्रचार करने के लिए वापस आए, तो ईर्ष्या में यहूदियों ने प्रेरितों के खिलाफ भीड़ को भड़काया, और परिणामस्वरूप, वे यहूदियों से अन्यजातियों की ओर मुड़ गए, और ऐसा करते हुए, वे इस आयत को उद्धृत करते हैं। सबसे पहले, पौलुस और बरनबास ने साहसपूर्वक बात की। यह आवश्यक था कि परमेश्वर का वचन पहले तुम यहूदियों को सुनाया जाए, क्योंकि तुम इसे एक तरफ रख देते हो और अपने आप को अनन्त जीवन के अयोग्य समझते हो।

देखो, हम अन्यजातियों की ओर मुड़ रहे हैं, प्रेरितों के काम 13:46। क्योंकि प्रभु ने हमें यह कहते हुए आज्ञा दी है, मैंने तुम्हें अन्यजातियों के लिए ज्योति बनाया है, ताकि तुम पृथ्वी के छोर तक उद्धार लाओ - यशायाह 49:6 के दूसरे भाग का एक पूर्ण उद्धरण। और जब अन्यजातियों ने यह सुना, तो वे आनन्दित हुए और प्रभु के वचन की महिमा करने लगे, और जितने अनन्त जीवन के लिए नियुक्त किए गए थे, उन्होंने विश्वास किया। पौलुस और बरनबास उसी मार्ग का हवाला देते हैं जैसा कि शिमोन ने लूका के सुसमाचार में उन शब्दों में किया था जिन्हें मैंने अभी पढ़ा है।

लूका में, यीशु अन्यजातियों के लिए प्रकाश है, लेकिन प्रेरितों के काम में, प्रेरित अन्यजातियों के लिए उस प्रकाश का विस्तार बन जाते हैं। इस प्रकार, चर्च का मिशन पुत्र के साथ उसके संबंध में समाहित है। दूसरा, प्रेरितों के काम की कार्यक्रम संबंधी कविता, प्रेरितों के काम 1:8, यीशु और उसके लोगों के बीच और अधिक संबंधों का सुझाव देने के लिए सेवक गीतों का संकेत देती है।

लेकिन जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तब तुम सामर्थ्य प्राप्त करोगे, और यरूशलेम में, सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे। जबकि शिमोन द्वारा प्रेरितों के काम 49:6 के उद्धरण में अंतिम वाक्यांश को छोड़ दिया गया है, ताकि मेरा उद्धार पृथ्वी की छोर तक पहुँच सके, लूका ने प्रेरितों के काम 1 में उस पंक्ति को उठाया, जब यीशु ने अपने शिष्यों को आदेश दिया। जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तब तुम सामर्थ्य प्राप्त करोगे, और यरूशलेम में, सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।

डेनिस जॉनसन बताते हैं, "सेवक गीतों का सबसे स्पष्ट संकेत पृथ्वी के अंतिम भाग की अभिव्यक्ति है, इस उद्धरण के भीतर, जो मौखिक रूप से सेप्टुआजेंट, ग्रीक अनुवाद, यशायाह 49:6 के पढ़ने के समान है।" इस प्रकार, प्रेरितों के काम 1:8 में लूका द्वारा इस उद्धरण का उपयोग प्रेरितों के काम में अपने चर्च के माध्यम से यीशु के मिशन को आगे बढ़ाता है। लूका के सुसमाचार में, यीशु अन्यजातियों के लिए प्रकाश है।

प्रेरितों के काम में, चर्च उस प्रकाश को पृथ्वी के छोर तक ले जाता है। यीशु और उसके लोग दोनों ही पीड़ित सेवक के यशायाह के चित्र को पूरा करते हैं। चर्च इस चित्र को पूरा करता है, क्योंकि यह अपने मंत्रालय में यीशु के मिशन को मूर्त रूप देकर यीशु की कहानी में भाग लेना जारी रखता है।

हम यीशु की पीड़ा सहने वाले सेवक के रूप में अद्वितीयता की पुष्टि करते हैं। केवल उसका दुख ही पाप का प्रायश्चित्त करता है। परमेश्वर के लोगों का दुख पाप का प्रायश्चित्त नहीं करता।

वह बाद में अपनी सेवकाई में, पीड़ाओं के बारे में बात करता है, यीशु के कष्टों में जो कमी थी उसे पूरा करता है। वह प्रायश्चित्त करने के बारे में बात नहीं कर रहा है। पॉल इस तथ्य की ओर इशारा कर रहा है कि मसीह, जाहिर है, वही विषय प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में गूंजता है।

मसीह ने अपने चर्च को दुख का एक हिस्सा दिया है। और उसके साथ एकता में, हम दुख उठाते हैं, वैसे ही जैसे उसके साथ एकता में हम महिमा पाएंगे। मसीह का दुख ही मुक्तिदायक है।

लेकिन जब परमेश्वर के लोग उसके बुलावे की खोज में कष्ट उठाते हैं, तो वे उसकी कहानी में भाग लेते हैं। पौलुस बाद में सुझाव देगा कि सहभागिता का अर्थ यीशु के पदचिन्हों पर चलने से कहीं अधिक है, बल्कि उसके कष्टों में सहभागी होना है ताकि हम भी उसकी महिमा में सहभागी हो सकें। रोमियों 8:17. संदर्भ कहता है कि हम परमेश्वर के सच्चे बच्चे हैं, बशर्ते कि हम उसके साथ कष्ट सहें ताकि हम भी उसके साथ महिमा पा सकें।

रोमियों 8:17. प्रेरितों के काम के लिए निष्कर्ष, जैसा कि हमने पुराने नियम और समकालिक सुसमाचारों के लिए किया था, हमने समावेशन, पहचान, समावेशन और भागीदारी के संदर्भ में

सोचा है, यदि आप चाहें तो मसीह के साथ एकता के मुक्ति-ऐतिहासिक पूर्ववर्ती के रूप में। शास्त्र के वे भाग मसीह के साथ एकता के सिद्धांत को नहीं सिखाते हैं, लेकिन वे जॉन के सुसमाचार और पॉल के पत्रों में इसकी व्याख्या के लिए एक आधार तैयार करते हैं। प्रेरितों के काम में, मसीह के साथ एकता को स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है, न ही उद्धार के आंतरिक कामकाज की खोज की गई है।

इसके बजाय, प्रेरितों के काम यरूशलेम से यहूदिया से सामरिया तक और पृथ्वी के अंत तक परमेश्वर के राज्य के प्रसार का दस्तावेजीकरण करना चाहते हैं। जैसे-जैसे लोग पश्चात्ताप करते हैं और यीशु पर विश्वास करते हैं, उन्हें बपतिस्मा दिया जाता है और पवित्र आत्मा दी जाती है। प्रेरितों के काम एकता के लिए मुक्ति-ऐतिहासिक आधार प्रदान करते हैं; अर्थात्, पेंटेकोस्ट आत्मा के माध्यम से बपतिस्मा में और यीशु की कहानी में भागीदारी में चर्च के जीवन में अधिनियमित एकता की वास्तविकता प्रदान करता है, और पहचान के माध्यम से एकता की अवधारणा के आगे के गठन का संकेत देता है, विशेष रूप से पॉल के धर्मांतरण में।

पॉल का धर्म परिवर्तन एक ऐतिहासिक घटना थी जिसने सबसे बड़े उत्पीड़क को सबसे बड़े समर्थक में बदल दिया, जिसमें प्रेरितों के काम की पुस्तक के पहले भाग में पीटर के चैंपियन होने की उचित मान्यता थी। पॉल, अन्यजातियों के लिए प्रेरित के रूप में, बेजोड़ थे, और फिर भी यह दमिश्क रोड का अनुभव था जिसने उन्हें हमेशा के लिए मसीह के सेवक के रूप में पहचाना, जैसा कि वे अपने सभी पत्रों में कहते हैं, मसीह के दास के रूप में। और एक प्रेरित के रूप में, यहां तक कि नियत समय से बाहर बुलाए गए व्यक्ति के रूप में, 1 कुरिन्थियों 15, प्रेरित कहलाने के योग्य नहीं, क्योंकि जैसा कि उन्होंने कहा, मैंने भगवान के चर्च को सताया, लेकिन वह एक प्रेरित था, और उसने दमिश्क के रास्ते पर मसीह के इस विशेष प्रकटन में पुनर्जीवित मसीह को देखा, उसका विशेष मसीह दर्शन, और पॉल कभी भी वही नहीं रहा।

इसने उसकी पहचान बदल दी। वह मसीह में एक मनुष्य बन गया। वह मसीह के साथ एक मनुष्य बन गया, हालाँकि प्रेरितों के काम हमें यह नहीं बताते कि इसका क्या मतलब है।

यह प्रेरित पौलुस के जीवन में इसका उदाहरण है। प्रेरितों के काम में एकता के सिद्धांत को परिभाषित नहीं किया गया है, लेकिन यह हमें दिखाता है कि परमेश्वर के लोगों के जीवन में एकता कैसी दिखती है। जब हम प्रेरितों के काम के मुख्य विषयों पर इसकी शैली के प्रकाश में विचार करते हैं, तो यह आरंभिक चर्च का एक आख्यान था, न कि एक सैद्धांतिक पत्र।

चर्च के विकास का वर्णन करने के अपने उद्देश्य के प्रकाश में, ईसाई धर्म की एक व्यवस्थित व्याख्या देने के लिए नहीं, जो कि रोमियों का अनुमान है, और ल्यूक, प्रेरितों के काम और पूरे नए नियम के भीतर संदर्भ है, इसलिए जब हम एक के प्रकाश में प्रेरितों के काम के मुख्य विषयों पर विचार करते हैं, तो इसकी शैली, यह एक प्रारंभिक चर्च कथा है, इसका उद्देश्य चर्च के विकास का वर्णन करता है, और ल्यूक, प्रेरितों के काम और पूरे नए नियम के हिस्से के रूप में इसका संदर्भ है, हम पाते हैं कि एकता को स्पष्ट रूप से नहीं सिखाया जाता है, बल्कि मिशनरी चरण पर लागू किया जाता है। हमें प्रेरितों के काम में संकेत मिलते हैं कि आज चर्च का जीवन कैसा होना

चाहिए क्योंकि हम उसके साथ एकता में रहते हैं। उदाहरण के लिए, हमें पीड़ा पर विचार करना चाहिए, विशेष रूप से उत्पीड़न के कारण, मसीह में भागीदारी के रूप में।

पॉल ने ऐसा किया, ताकि मैं उसे जान सकूँ, फिलिप्पियों 3, और उसके पुनरुत्थान की शक्ति को, उसके दुखों में भागीदार बन सकूँ। यह स्पष्ट है। इस प्रकार, दुख से बचना नहीं चाहिए, और निश्चित रूप से इसकी तलाश नहीं करनी चाहिए।

दुख से दूर नहीं रहना चाहिए बल्कि इसे ईसाई होने के अर्थ के रूप में समझना चाहिए। तो, पहचान के वही तीन विषय। इस मामले में, चर्च की पहचान यीशु की कहानी से की जाती है, और व्यक्तिगत विश्वासियों की पहचान यीशु के साथ की जाती है क्योंकि वे बपतिस्मा, निगमन, पेंटेकोस्ट में उसका नाम लेते हैं, लेकिन न्यू टेस्टामेंट चर्च का जन्मदिन जिसमें लोग सुसमाचार संदेश का जवाब देते हुए आत्मा प्राप्त करके मसीह के शरीर का हिस्सा बन जाते हैं।

और साथ ही, निश्चित रूप से, यीशु की कहानी में भागीदारी, जिसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में रूपरेखा के रूप में पुनः प्रस्तुत किया गया है, मसीह के साथ एकता की आशा करता है। इस प्रकार पुराने नियम, समकालिक सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक में मसीह के साथ एकता की खोज या नींव रखने के बाद, हम मसीह के साथ वास्तविक एकता की ओर बढ़ते हैं, और हमारे पास नए नियम में दो बहुत अलग प्रस्तुतियाँ हैं। ओह, यह पॉल और जॉन के सुसमाचार के अलावा अन्य स्थानों पर है।

उदाहरण के लिए, 1 यूहन्ना के पास कहने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं जिनका अध्ययन यूहन्ना के सुसमाचार के प्रकाश में किया जाना चाहिए। नए नियम के अन्य पाठ और नए नियम की अन्य पुस्तकों में कुछ अंश हैं, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि यूहन्ना और पौलुस मसीह के साथ एकता के धर्मशास्त्री हैं। यूहन्ना के सुसमाचार में मसीह के साथ एकता।

जॉन और पॉल एकता के बारे में बहुत कुछ कहते हैं। वे अलग-अलग मुहावरे, बहुत अलग मुहावरे, अलग-अलग शब्दावली और अलग-अलग जोर का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन उनकी शिक्षाएँ एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं। मैं चाहता हूँ कि हम जॉन के सुसमाचार में पाँच अंशों का पता लगाएँ जिनसे हम मसीह के साथ एकता की शिक्षा प्राप्त करेंगे।

सबसे पहले, यूहन्ना 6 में यूहन्ना का जीवन की रोटी का प्रवचन। मैं उन आयतों को विस्तार से बताऊँगा, जैसे-जैसे हम उन पर काम करेंगे। यूहन्ना 10 में पिता और पुत्र का परस्पर वास। तीसरा, पिता और पुत्र का, तथा पिता और पुत्र और विश्वासियों का परस्पर वास।

यूहन्ना 14 में, यीशु दाखलता है, यूहन्ना 15 में विश्वासी डालियाँ हैं। पाँचवाँ, पिता और पुत्र का, तथा यूहन्ना 17 में पुत्र और विश्वासियों का परस्पर निवास।

पाँच अंश। यीशु का जीवन की रोटी पर प्रवचन, यूहन्ना 6. पिता और पुत्र का परस्पर निवास, यूहन्ना 10. पिता और पुत्र का परस्पर निवास, तथा वे और विश्वासी, यूहन्ना 14.

यीशु दाखलता हैं, विश्वासी डालियाँ हैं, यूहन्ना 15. पिता और पुत्र का, तथा पुत्र और विश्वासियों का परस्पर निवास, यूहन्ना 17. सबसे पहले, यीशु का जीवन की रोटी का प्रवचन, यूहन्ना 6, और ये पद हैं: 32 से 35, 40 से 41, 40 से 41 और 38 से 58.

यीशु का जीवन की रोटी का प्रवचन, यूहन्ना 6:32 से 35, और 48 से 58. यूहन्ना 6 परमेश्वर के पुत्र के अवतार और परमेश्वर की उद्धार की योजना के संदर्भ में एकता को रखता है।

एक संकेत और उपदेश के साथ, जो चौथे सुसमाचार में एक असामान्य संयोजन है, एक संकेत और उपदेश के साथ, यीशु खुद को स्वर्ग से रोटी के रूप में चित्रित करता है। यीशु के शिष्य लोगों को रोटियाँ और मछलियाँ देते हैं। जब सभी भर जाते हैं, तो शिष्य बची हुई रोटी के टुकड़ों से बारह टोकरियाँ इकट्ठा करते हैं।

यह पृष्ठभूमि है। यह संकेत है, जो यीशु के चमत्कारों के लिए प्रेरित यूहन्ना का शब्द है। यीशु का मुख्य शब्द वही कार्य है जो पिता ने उसे करने के लिए दिया था।

तो, यह चिन्ह है, रोटियों और मछलियों का गुणा होना, परमेश्वर का एक चमत्कार। यूहन्ना इस चिन्ह, इस चमत्कार को एक संदेश से जोड़ता है ताकि उपदेश और चिन्ह एक साथ चलें। स्वर्ग से मन्ना।

यीशु इस चमत्कार को पुराने नियम के छुटकारे के इतिहास से जोड़ते हैं। यह बहुत से पाठकों को यीशु द्वारा रोटियाँ और मछलियाँ बढ़ाने, निर्गमन 16 में परमेश्वर द्वारा इस्राएलियों को मन्ना खिलाने की याद दिलाता है। लोग निर्गमन 16 में एक संकेत माँगते हैं, जो उन्हें याद दिलाता है कि परमेश्वर ने उनके पूर्वजों को जंगल में मन्ना खिलाया था।

यूहन्ना के दिनों में लोग यीशु से मन्ना की याद दिलाने वाला चिन्ह माँगते हैं। उसने उन्हें खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी, यूहन्ना 6.31। यह नहेमायाह 9.15 से एक उद्धरण है, जो जंगल में अपनी यात्रा के दौरान दिन-प्रतिदिन अपने लोगों के लिए परमेश्वर के प्रावधान का सारांश देता है।

यह भजन 78:24, 25 और भजन 105:40 की भाषा से भी मिलता-जुलता है। इसलिए यूहन्ना 6:31 में नहेमायाह 9:15, भजन 78:24, 25 और 105:40 का हवाला दिया गया है। यूहन्ना 6:32 और 33 में, हम देखते हैं कि यीशु इस महान चमत्कार को पीछे छोड़ देता है।

यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ कि मूसा ने तुम्हें स्वर्ग से रोटी नहीं दी, बल्कि मेरे पिता ने तुम्हें स्वर्ग से सच्ची रोटी दी है। क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।” जैसा कि यूहन्ना के सुसमाचार में प्रथागत है, वे यीशु को गलत समझते हैं, और कहते हैं, “श्रीमान्, हमें यह रोटी हमेशा दिया करो।”

वे लगातार बुफे की तलाश में हैं। वे स्वर्ग से नियमित भोजन चाहते हैं और भोजन के लिए काम नहीं करना चाहते। और वे गलत समझते हैं।

जॉन की शैली की एक विशेषता, जॉन की शैली की एक दर्जन या उससे ज़्यादा विशेषताओं में से एक, गलतफ़हमियाँ हैं। यीशु आध्यात्मिक स्तर पर बोलते हैं। लोग उन्हें भौतिक स्तर पर समझते हैं।

वे उसकी बातों को गलत समझते हैं। कभी-कभी, इसमें हास्य जुड़ा होता है। कभी-कभी इसमें रहस्य भी होता है।

परमेश्वर का पुत्र कौन है, इसका रहस्योद्घाटन लगभग हमेशा होता है। यूहन्ना 20:30 और 31 में यूहन्ना के उद्देश्य कथन के अनुसार, यीशु ने अपने शिष्यों की उपस्थिति में कई अन्य चिन्ह दिखाए, जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं। लेकिन ये चिन्ह इसलिए लिखे गए हैं ताकि तुम विश्वास करो कि यीशु मसीह है, परमेश्वर का पुत्र है और तुम उसके नाम से जीवन पा सकते हो।

यीशु पुराने नियम के पात्रों का स्थान ले लेता है। वह पात्रों, संस्थाओं और घटनाओं का स्थान ले लेता है। यहाँ, वह मूसा के माध्यम से इस्राएल को मन्ना देने वाले परमेश्वर के स्थान को ले लेता है।

मन्ना ने अगले दिन तक इस्राएल की शारीरिक भूख को अस्थायी रूप से संतुष्ट किया। लेकिन देहधारी शब्द दुनिया की आध्यात्मिक भूख को संतुष्ट करता है। फिर से, मैंने गलतफहमी की ओर इशारा किया, और श्लोक 35 महत्वपूर्ण है।

मैं जीवन की रोटी हूँ। जो कोई मेरे पास आएगा उसे भूख नहीं लगेगी, यीशु ने कहा। जो मुझ पर विश्वास करेगा उसे कभी प्यास नहीं लगेगी।

जैसे पानी प्यास बुझाता है, और जैसे रोटी भूख मिटाती है, वैसे ही परमेश्वर का देहधारी पुत्र हर विश्वासी को आत्मिक रूप से संतुष्ट करता है। पद 36 से 47 में, हमें उद्धार में पिता और पुत्र की भूमिकाओं का एक विस्तृत चित्रण मिलता है। मुझे इस भाग को पढ़ने दें।

यह कहने के बाद कि वह जीवन की रोटी है, और 35 में उसके पास आने और उस पर विश्वास करने के समानांतर होने के बाद, यीशु कहते हैं, मैंने तुमसे कहा कि तुमने मुझे देखा है, और फिर भी तुम विश्वास नहीं करते। जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा, मैं उसे कभी नहीं निकालूँगा। क्योंकि मैं अपनी इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से नहीं आया हूँ, बल्कि उसकी इच्छा पूरी करने आया हूँ जिसने मुझे भेजा है।

और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है, कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ, परन्तु उसे अन्तिम दिन फिर जिला उठाऊँ। क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यही है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, अनन्त जीवन पाए, और मैं उसे अन्तिम दिन फिर जिला उठाऊँगा।

इसलिए, यहूदी उसके बारे में बड़बड़ाने लगे क्योंकि उसने कहा, मैं वह रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी है। यीशु ने कहा, उन्होंने कहा, उन्होंने कहा, क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं है, जिसके पिता और माता को हम जानते हैं? अब वह कैसे कहता है, कि मैं स्वर्ग से उतरा हूँ? यीशु ने उन्हें उत्तर

दिया, आपस में मत बड़बड़ाओ। कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि पिता जिसने मुझे भेजा है उसे खींच न ले, और मैं उसे अंतिम दिन जिला उठाऊँगा।

भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में लिखा है कि वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे। जो कोई पिता से सुनता और सीखता है, वह मेरे पास आता है। यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है, केवल वही जो परमेश्वर की ओर से है।

उसने पिता को देखा है। मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है। जीवन की रोटी मैं हूँ।

तुम्हारे पूर्वजों ने जंगल में मन्ना खाया और मर गए। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है ताकि कोई इसे खाए और न मरे। मैं वह जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी है।

इन श्लोकों में उद्धार में पिता और पुत्र की भूमिकाओं का एक विस्तृत विवरण दिया गया है। मुझे लगता है कि यह हमारे लिए विराम लेने का एक अच्छा समय है क्योंकि यह थोड़ा जटिल और सुंदर, थोड़ा लंबा खंड है। तो, आइए हम अपने अगले व्याख्यान में इसे फिर से लें।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 8 है, मसीह के साथ एकता के लिए आधार, प्रेरितों के कार्य, भागीदारी, यूहन्ना का सुसमाचार।